उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय के सप्तम दीक्षांत समारोह में माननीय राज्यपाल महोदय का संबोधन

(11 जनवरी 2023)

जय हिन्द!

उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय के इस **सातवें दीक्षांत समारोह** में आप सभी के बीच आकर मुझे अत्यन्त **प्रसन्नता** हो रही है।

मेडल और डिग्री प्राप्त करने वाले आप सभी **छात्र–छात्राओं**, आपके **माता–पिता** और आपके **गुरूजनों** को आपकी आज की इस एक बड़ी उपलब्धि के लिए मैं **हार्दिक बधाई** देता हूँ।

आपकी शिक्षा और सफलता में उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय और यहां के **फैकल्टी मैम्बर्स** की भी बहुतबड़ी भूमिका है इस लिए मैं इस अवसर पर विश्वविद्यालय और सभी **फैकल्टी मैम्बर्स** को भी हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं देता हूँ।

शिक्षाजीवन मेंखुशहालीलेकर आती है, और शिक्षा प्राप्त करने के लिए प्रतिभा, संकल्प और परिश्रम का बहुत बड़ा योगदान होता है।

मुक्त शिक्षा में तो संकल्प और परिश्रम का और भी अधिक महत्व होता है।

स्वयं की शक्ति और संकल्प के विषय में प्राचीन शिक्षाओं में एक बहुत ही सुन्दर बात बतायी गयी है–**'जंगल में शेर का कोई राज्याभिषेक नहीं करता है, वह अपने संकल्प, साहस और शक्ति के बल पर जंगल का राजा बन जाता है।**

आप **अमृतकाल के युवा** हैं, आपने ही आने वाले **पच्चीस वर्षों में विकसित भारत का नेतृत्व करना** है। ये 25 साल प्रत्येक भारतीय के लिए महत्वपूर्ण हैं।

और आप सब वे सौभाग्यशाली युवा हैं जिन्होंने विकसित भारत में भारत की स्वतंत्रता के **शताब्दी वर्ष का महान् उत्सव मनाना है।**

नए भारत के निर्माण में नई व्यवस्थाओं का निर्माण करना है, हमें अत्याधुनिक व्यवस्थाओं का समावेश करना है।

जो पहले कभी नहीं हुआ, जिन लक्ष्यों को पाने की कल्पना भी न हो, नये भारत के निर्माण के लिए हमें ऐसी **सोच,** ऐसे **विचार** और **ऐसी धारणा** विकसित करनी है।

हमें अपने हर एक सिस्टम को इंटरनेशनल स्टैंडर्ड्स के अनुरूप विकसित करना है।

और इसके लिए आपको देश सेवा और साधना के कार्य को स्वयं ही अपने हाथों में लेना होगा। **राष्ट्र निर्माण में अपनी भूमिका निभानी होगी।**

ज्ञान–विज्ञान, कला, संस्कृति, सभ्यता, परम्परा को ऊंचे शिखर पर एक नया भारत बनाना है। **सामाज की एकता** और **राष्ट्र की अखण्डता** के लिए कार्य करना है।

'एक भारत श्रेष्ठ भारत' यह केवल एक नारा नहीं है यह हम सबका सामूहिक संकल्प है।

हमें अपने इन महान लक्ष्यों को ***Artificial Intelligence, Innovation, Technology, Geospatial***जैसे तकनीक के उचित प्रयोग करने में अर्जित कर सकते हैं।

हमें ***Technology***के बल पर भारत के लोगों की तरक्की के रास्ते खोजने हैं।

आप सब जानते हैं कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 21वीं सदी में प्राचीन समृद्धि और आधुनिक टेक्नोलॉजी को जोड़ने की दिशा में मूल मंत्र दिये गये हैं।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति में भारत की महान्तम धरोहरों, ज्ञान, विज्ञान, भाषा, संस्कृति, सभ्यता, कला, कौशल और उद्यमिता के विकास के लिए गहराई से विचार किया गया है।

राष्ट्रीय शिक्षानीति में कहा गया है कि भारतीय भाषाओं में ज्ञान का प्रसार हो, संस्कृत भाषा को सीखने के लिए एक दिशा मिले।

निर्णयों में स्वतंत्रता हो, **'ड्रोन टेक्नोलॉजी, साइबर स्पेस, जियो–भू–स्थानिक' जैसे** नए विकल्पों से समृद्धि हासिल की जाए।

हमें शिक्षा में एक ऐसे नये दौर में प्रवेश करना है, जहां हमारे **युवा स्किल्ड, कॉन्फिडेंट, प्रैक्टिकल और कैलकुलेटिव** हों।

मुझे इस बात की बहुत खुशी है कि यह विश्वविद्यालय इस दिशा में आगे बढ़ रहा है।

रोजगार की समस्या, पलायन की समस्या, विषमता को सुगमता में बदलने वाले यहां के अपार संसाधनों resources को महान अवसर और उपलब्धियों में बदलना है।

इसके लिए आप शोध के प्रति उत्साही बनें। नई खोज करें। देवभूमि में शोध और अनुसंधान की अपार संभावनाएं हैं।

आपको याद होगा, कोरोना के बाद घरों को लौटे कई युवाओं ने बहुत शानदार तरीके से उद्यमिता और स्वरोजगार रास्ते अपनाए।

'पलायन' के बारे में गहराई से सोचने पर मुझे वह कहानी याद आती है, जब एक किसान अमीर बनने के लिए अपने सारे खेत और घर बेच कर अफ्रीका के जंगलों में सोने के भंडार खोजने के लिए चला जाता है। उसे तो सोने के भण्डार नहीं मिले लेकिन जिसे उसने अपने खेत बेच दिये थे उस किसान को जरूर उसी खेत के अंदर एक चमचमाता बहुमूल्य हीरा मिल गया था, जिसके उसकी जिन्दगी ही बदल दी थी।

उत्तराखण्ड में भी परिश्रम और नये–नये विचारों से समृद्धि हासिल की जा सकती है। उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय को भी इस दिशा में अपनी भूमिका निभानी चाहिए।

मैं चाहुंगा कि यह विश्वविद्यालय उत्तराखण्ड के प्रसिद्ध उद्यमियों से विचार–विमर्श करके ग्रामीण इलाकों में रोजगार बढ़ाने के के लिए अवसर तैयार करें।

आज विश्वविद्यालय ने एक लाख छात्रों की एक बड़ी संख्या को छू लिया है। शिक्षा के क्षेत्र में एक नये कीर्तिमान के साथ यह एक भव्य कैम्पस के रूप में उभर रहा है।

इसमें कुलपति प्रो. ओमप्रकाश नेगी जी की दूरदर्शी सोच, कुशल नेतृत्व की बड़ी भूमिका है।

विज्ञान विषयों के लिए नये भवन, प्रयोगशालाएं, Multipurposeहॉल और ऐसी ही अनेक नयी नयी योजनाओं को धरातल पर लाया जा रहा है।

छात्रों की सुविधा के लिए स्टुडेंट हेल्पलाइन, कम्यूनिटी रेडियो, वीडियो लेक्चर, मूक्स (MOOCs) ऑडियो लेक्चर्स जैसे आधुनिक तंत्र विकसित किये जा रहे हैं।

इन्हें अभी और बड़े लेबल पर विकसित किया जाना जरूरी है। शिक्षा के क्षेत्र में ये महत्वपूर्ण साबित होंगे। आप भी इनका उपयोग जारी रखें।

डिग्री मिलने के बाद ज्ञान का अन्त नहीं हो जाता, सीखना एक जीवन भर की प्रक्रिया है।

हमें निरंतर नवीन ज्ञान की खोज करते रहना चहिए।

जीवन मूल्यों के आधार पर राष्ट्र व समाज के लिए कार्य करना हमारी साझी जिम्मेदारी है।

आज दुनिया भर में सम्भावनाओं और अवसरों की बड़ी संभावनाएं विद्यमान हैं।

कल्पनाओं को पंख देते हुए नई सम्भावनाओं का पता लगाने और सफल होने के लिए निरंतर परिश्रम करें।

विश्वविद्यालय पाठ्यक्रमों को रोजगार की सम्भावनाओं पर केन्द्रित कर तैयार करें।

हमें उत्तराखण्ड प्रदेश को उच्च शिक्षा के क्षेत्र में एक मॉडल स्टेट के रूप में आगे लाना है।

मुझे पूरा विश्वास है, आने वाले समय में उत्तराखण्ड और भारत दुनिया में वैश्विक शिक्षा का एक बड़ा केंद्र बनकर उभरेगा।

प्रिय छात्रो,

आप सभी सौभाग्यशाली हैं कि देवभूमि उत्तराखण्ड से आपका नाता जुड़ा है, मैं चाहता हूँ कि आप उत्तराखण्ड की प्राकृतिक संपदा, जैविक विविधता में गहरे समाधान खोजें।

स्थानीय लोगों की क्षमताओं को ध्यान में रखकर कार्ययोजनाएं और प्रोजेक्ट विकसित करें।

विश्वविद्यालय भी रोजगार परक पाठ्यक्रम चलाएं। ज्ञान सम्पदा के इस युग में दूरस्थ शिक्षा को बढ़ावा देना आज की जरूरत है।

नयी शिक्षा नीति ने विषयों और भाषाओं की बाधाओं को तोड़कर संभावनाओं के नये द्वार खोले हैं।

नयी शिक्षा नीति के अनुरूप उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय स्वच्छ भारत, डिजीटल इंडिया, आदर्श ग्राम जैसे राष्ट्रीय उद्देश्यों में भी अपना योगदान दे रहा है।

मेरी अपेक्षा है कि मुक्त विश्वविद्यालय क्वालिटी और क्वांटिटी में उत्तम संतुलन विकसित कर मुक्त शिक्षा को नयी प्रतिष्ठा दिलाए। अपनी गरिमा और प्रतिष्ठा में वृद्धि करे।

विश्वविद्यालय ने NAAC B++ग्रेड हासिल किया है। विशेष बी. एड. विभाग ने दिव्यांगों की शिक्षा में नये आयाम स्थापित किये हैं।

इस कार्य के लिए विश्वविद्यालय को राष्ट्रपति पदक से सम्मानित किया गया है।

इस वर्ष की इन सब नयी उपलब्धियों के लिए मैं उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय को हार्दिक बधाई देता हूँ।

मैं उपाधि पाने वाले सभी विद्यार्थियों के उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ।

विश्वविद्यालय के कुलपति, कार्यपरिषद, विद्यापरिषद के सभी सदस्यों और संस्थान से जुड़े सभी लोगों को भी सप्तम दीक्षांत समारोह के सफल आयोजन के लिए बधाई एवं शुभकामनाएं देता हूँ।

आज मेरे साथ इस मंच पर उपस्थित रहे सभी महानुभावों को भी इस शानदार पलों को साझा करने के लिए हार्दिक धन्यवाद देता हूँ।

जय हिन्द!